अध्याय
8

रामपुर गाँव : एक ग्रामीण अर्थव्यवस्था

(Rampur : A Village Economy)

रामपुर गाँव की कहानी

एक गाँव की यह कहानी, एक गाँव में उत्पादन गतिविधियों के विभिन्न प्रकार के माध्यमों से हमें अवगत करवायेगी। भारत के गाँवों में खेती मुख्य उत्पादन गतिविधि है। गैर कृषि गतिविधियों में अन्य उत्पादन गतिविधियाँ, छोटी विनिर्माण, परिवहन, दुकान आदि शामिल हैं। हम इस अध्याय में गतिविधियों के इन दोनों प्रकारों को देखेंगे। उत्पादन प्रणालियों का विश्लेषण एक खेत या कारखाने के किसी भी उत्पादन प्रक्रिया में आवश्यक तत्वों में कुछ विचारों का उपयोग कर किया जा सकता है। बदले में उत्पादन का लोगों के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को देखा जा सकता है।

यह रामपुर गाँव की कहानी है। (बदला हुआ नाम) लेखक यहाँ गए और इस क्षेत्र में रुके थे और बारीकी से विभिन्न पहलुओं का विस्तृत अध्ययन किया था। यह लेख उसी पर आधारित है। लेखक ने समय के बदलाव के साथ गाँव में हुए कई बदलावों पर ध्यान दिया है। हो सकता है आप कहानी पढ़कर ऐसा सोचते हैं कि रामपुर के समान परिस्थिति आपके क्षेत्र में भी होगी। या स्थिति अलग है? यदि हाँ, तो किस तरह से ?

- आप कृषि के बारे में क्या जानते हैं? फसलें विभिन्न मौसमों में किस प्रकार बदलती है? कृषि से संबंधित अधिकांश लोग भू-स्वामी हैं या मज़दूर है?

इस अध्याय में आप अपनी स्थिति या अखिल भारतीय स्थिति के संपर्क में आयेंगे। उदाहरण के लिए हम रामपुर में जमीन के वितरण पर चर्चा करते हैं। हम यह भी जाँच करते हैं कि भारत में क्या हुआ है? हमें लगता है कि इसमें मजबूत समानताएँ हैं। यह हमें यह समझने में मदद करता है कि हमारा रामपुर कुछ विशेष सुविधाओं से भरा है इसकी सुविधाएँ कुछ बदलाव के साथ भारत भर में प्रचलित हैं। इसकी भी तुलना अपने क्षेत्र से की जा सकती है।

रामपुर में खेती

रामपुर उत्तर प्रदेश के पश्चिमी हिस्से में गंगा बेसिन के उपजाऊ अलुवियल मैदानों में स्थित है। पंजाब और हरियाणा के साथ साथ, पश्चिमी उत्तर प्रदेश कृषि समृद्ध क्षेत्र का एक सन्निहित भाग है। यह गाँव पड़ोसी गाँवों और शहरों के साथ अच्छी तहर से जुड़ा हुआ है। रायगंज एक बड़ा गाँव है। यह रामपुर से 3 किलोमीटर की दूरी पर है। एक सड़क निकटतम छोटे शहर जहाँगीराबाद (12 किलोमीटर दूर) को रायगंज से जोडती है। परिवहन के कई साधन जैसे :- बैलगाडी, तांगा, बोगी (गुड़ और अन्य चीज़ों से भरे हुए)

SCERT TELANGANA

(भैंस द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी) मोटर साइकिल, जीप, ट्रैक्टर और ट्रक इस सड़क पर दिखाई देते हैं।

रामपुर में कृषि मुख्य उत्पादन गतिविधि है। काम कर रहे लोगों की आजीविका खेती पर निर्भर हैं। वे किसान या खेत मजदूर हो सकते हैं। इन लोगों की जीविका खेतों पर उत्पादन से संबंधित है।

भूमि और अन्य प्राकृतिक संसाधन

भूमि, कृषि उत्पादन के लिए सबसे आवश्यक और महत्वपूर्ण कारक है। खेती के अंतर्गत आनेवाला भूमि क्षेत्र व्यावहारिक रूप से तय हो गया है। रामपुर में 1921 के बाद से खेती के अंतर्गत आने वाले भूमि क्षेत्र में कोई विस्तार नहीं हुआ है। तब तक आसपास के जंगलों को मंजूरी दे दी गई थी और गाँव की बंजर भूमि में से कुछ कृषि योग्य भूमि में बदल रहे थे। खेती के अंतर्गत नयी भूमि द्वारा कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए कोई गुंजाइश नहीं है।

भूमि मापन

गाँवों में भूमि को एकड़ सेंट या गुंटा जैसी स्थानीय इकाइयों में मापा जा रहा है। हालांकि जमीन को मापने का मानक इकाई हेक्टेर है। एक हेक्टेर में 10000 वर्ग मीटर है । अपने स्कूल के लिए जमीन के क्षेत्र के साथ 1 हेक्टेर क्षेत्र की तुलना करें । अपने शिक्षक के साथ चर्चा करें ।

रामपुर में खाली बेकार पड़ी कोई जमीन नहीं है। वर्षा के मौसम के दौरान (खरीफ) किसान ज्वार व बाजरा उगाते हैं। ये पशु चारे के रूप में भी उगाये जाते हैं। यह अक्तूबर और दिसंबर के बीच आलू की खेती के बाद होता है। सर्दियों के मौसम में (रबी) गेहूँ बोया जाता है। उत्पादन से, किसान अपने परिवार की खपत के लिए पर्याप्त गेहूँ रखने के बाद शेष गेहूँ राइगंज बाजार में बेचते हैं। भूमि का एक हिस्सा साल में एक बार काटा जाता है, जिस पर गन्ना उगाया जाता है। गन्ना कच्चे रूप में या गुड़ के रूप में पास के शहर जहाँगीराबाद में व्यापारियों को बेच दिया जाता है।

एक ही वर्ष के दौरान जमीन के एक ही टुकडे पर एक से अधिक फसल उगाने को बहु-फसलों के रूप में जाना जाता है। यह जमीन से उत्पादन में वृद्धि का सबसे आम तरीका है। रामपुर में भी किसान कम से कम दो मुख्य फसलें पैदा करते हैं, कई किसान तीसरी फसल के रूप में आलू उगा रहे हैं।

रामपुर में किसान, विकसित सिंचाई प्रणाली के कारण अच्छी तरह से एक वर्ष में तीन अलग फसलें पैदा करने में सक्षम है। बिजली भी रामपुर में जल्दी ही आ गयी। इसने सिंचाई की प्रणाली को बदल दिया। तब तक पारसी पहिये (Persian Wheels), कुँओं से पानी खींचने और छोटे से क्षेत्र में सिंचाई के लिए किसानों द्वारा इस्तेमाल किये जाते थे। लोग बिजली से चलाने के नलकूप से आसानी से जमीन के बहुत बड़े क्षेत्रों की सिंचाई कर सकते है। पहले कुछ नलकूप, लगभग पचास साल पहले सरकार द्वारा स्थापित किए गए थे। जल्द ही, किसानों ने अपने स्वयं के नलकूपों की स्थापना करनी शुरू कर दी। नतीजतन 1970 के मध्य से 264 हेक्टेर के पूर्ण खेती क्षेत्र को सिंचित किया गया था।

भारत के सभी गाँवों में सिंचाई के ऐसे उच्च स्तर नहीं हैं। इसके अलावा नदीय मैदानों से, हमारे देश में तटीय क्षेत्र अच्छी तरह से सिंचित हैं। इसके विपरीत, पठार क्षेत्रों में जैसे दक्कन पठार में

SCERT TELANGANA

सिंचाई के निम्न स्तर हैं। आज भी देश में 40 प्रतिशत से कुछ कम क्षेत्र सिंचित है। शेष क्षेत्रों में खेती वर्षा पर निर्भर है। भारत के क्षेत्रों के लिए अध्याय 1 देखें।

- अटलस को देखकर सिंचित क्षेत्रों की पहचान कीजिए आपका क्षेत्र क्या इस श्रेणी के अंतर्गत आता है।

जमीन और पानी जैसे प्राकृतिक संसाधनों के गहन उपयोग से उत्पादन और पैदावार में वृद्धि हुई। जबकि प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग हमेशा न्यायसंगत ढंग से नहीं किया गया है। अनुभव बताते हैं कि भूमि की उर्वरता अति प्रयोग, रसायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग की वजह से घट रही है। पानी की स्थिति भी उतनी ही खतरनाक है। रामपुर गाँव की तरह भारत में सिंचाई भूमिगत जल के दोहन पर आधारित है। नतीजतन भूमिगत पानी का स्तर देश भर में तेज़ी से गिर गया है। यहाँ तक कि जिन क्षेत्रों में भरपूर बारिश और पुनर्भरण के अनुकूल प्राकृतिक प्रणालियाँ हैं वहाँ पर भी पानी का स्तर कम हो गया है। पानी की तेज़ गिरावट के कारण किसानों को पहले से भी गहरे ट्यूबवेल ड्रिल करना पड़ रहा है। सिंचाई के लिए डीजल/विद्युत का उपयोग बढ़ जाता है। इन विषयों को जानने के लिए अध्याय-5, भारत की नदियाँ और जलसंसाधन तथा अध्याय-11 साम्यता के साथ दीर्घकालिक विकास में आपने जो पढ़ा है उसका पुनःस्मरण कीजिए।

Graph : 1

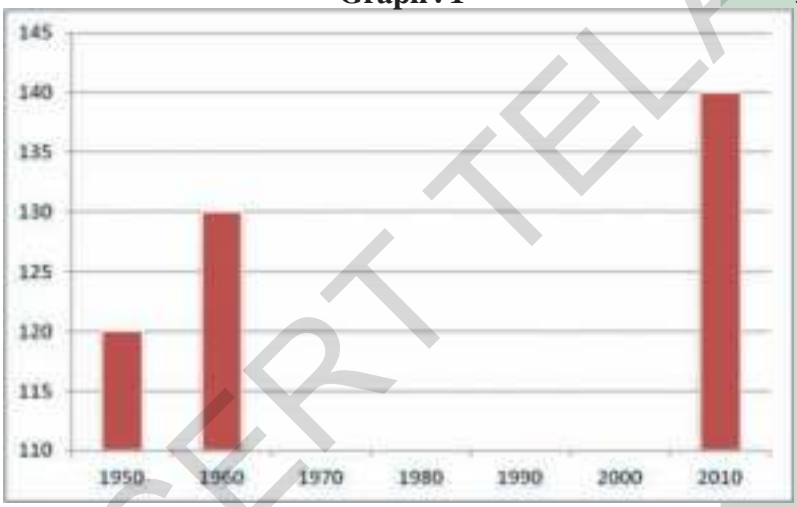

- निम्नलिखित तालिका में भारत में कृषि योग्य भूमि (आरेख पर) मिलियन हेक्टेर की इकाइयों में दर्शायी गयी है। आरेख क्या दर्शाता है? कक्षा में चर्चा कीजिए।

वर्ष	सिंचित क्षेत्र Area (in million hec)
1950	120
1960	130
1970	140
1980	140
1990	140
2000	140
2015	140

- आपने रामपुर में उगायी जाने वाली फसलों के बारे में पढ़ा है। आपके क्षेत्र में उगायी जाने वाली फसलों की जानकारी के आधार पर निम्न तालिका भरिए।

फसल का नाम	मास (जिसमें बीज बोये जाते हैं)	संग्रहण मास	जल / सिंचाईके स्त्रोत (वर्षा, तालाब, ट्यूबवेल, नहर आदि)

- बहुफसलीय खेती के क्या कारण हैं?

SCERT TELANGANA

रामपुर में भूमि वितरण

भूमि, खेती के लिए कितनी महत्वपूर्ण है आपको इसका एहसास हो गया होगा। दुर्भाग्य से, कृषि के क्षेत्र में लगे सभी लोगों के पास खेती के लिए पर्याप्त जमीन नहीं है। रामपुर की जनसंख्या 2,660 हैं, यहाँ विभिन्न जातियों के 450 परिवार रहते हैं। ऊँची जाति के परिवार गाँव की अधिकांश जमीन के मालिक हैं। उनके घर काफी बड़े, उनमें से कुछ, सीमेंट पलस्तर साथ ईंट से बने होते हैं। जनसंख्या का 1/3 भाग अनुसूचित जातियों (दलितों) का हैं, जो और अधिक छोटे घरों में रहते हैं, जिनमें से कुछ अंश फूस का होता है और मुख्य गाँव क्षेत्र के बाहर, एक कोने में स्थित होता है।

रामपुर में, एक तिहायी (1/3) यानी 150 परिवार भूमिहीन हैं। भूमिहीनों में अधिकांश दलित हैं। मध्यम और बड़े किसानों के 60 परिवार हैं जो 2 हेक्टेयर से अधिक भूमि पर खेती करते हैं। बड़े किसानों में से कुछ के पास 10 हेक्टेर से अधिक भूमि है। 240 परिवार आकार में 2 हेक्टेर से कम भूमि के छोटे भूखंडों पर खेती करते हैं । ऐसे भूखंडों की खेती से किसान परिवार को पर्याप्त आय प्राप्त नहीं होती है।

नक्शा 1 यह तेलंगाणा के गाँव में जमीन का एक नक्शा है।

1960 में गोविंद नामक किसान के पास 2.25 हेक्टेर असिंचित भूमि थी। अपने तीन बेटों की मदद से गोविंद खेती करता था। वे बहुत आराम से नहीं रहते थे, परिवार के पास एक भैंस थी जिस से अतिरिक्त आय प्राप्त होती थी। गोविंद की मृत्यु के कुछ वर्ष के बाद खेत को तीन बेटों के बीच विभाजित किया गया था। हर एक को केवल आकारमें 0.75 हेक्टेर जमीन का एक भूखंड मिला। यहाँ तक कि बेहतर सिंचाई और आधुनिक खेती के तरीकों के बावजूद गोविंद के बेटे अपनी जमीन से जीविका प्राप्त करने में सक्षम नहीं हैं। वर्ष के एक भाग के दौरान वे अतिरिक्त काम कर रहे हैं।

नक्शा 1, यह तेलंगाणा के गाँव में, जमीन का एक नक्शा है । आप विभिन्न आकार के भूखंडों और बड़ी संख्या में छोटे भूखंडों को देख सकते हैं।

SCERT TELANGANA

- नक्शा 1 में भूमि के छोटे भूखंडों को छायांकित करें।
- किसानों के कई परिवार भूमि के ऐसे छोटे भूखंडों पर खेती क्यों करते हैं ?
- भारत में किसानों का वर्गीकरण और जितनी भूमि पर वे खेती करते हैं, उसका विवरण निम्न तालिका और वृत्त-चित्र में दियागया है।

किसान के प्रकार	भूखंड का आकार	किसानों का प्रतिशत	भूखंड का प्रतिशत (कृषि क्षेत्र)
लघु कृषक	2 हेक्टेर से कम	87%	48%
मध्यम व बड़े कृषक	2 हेक्टेर से अधिक	13%	52%

सूचना :- यहाँ आँकड़े किसानों द्वारा खेती की भूमि को दर्शाते हैं। यह स्वामित्व या किराए पर लिया जा सकता है।

- सूचक चिह्न से क्या संकेत मिलते हैं? खेती की भूमि का वितरण भारत में असमान है। क्या आप इससे सहमत हैं ? समझाइए ।

आरेख : 2

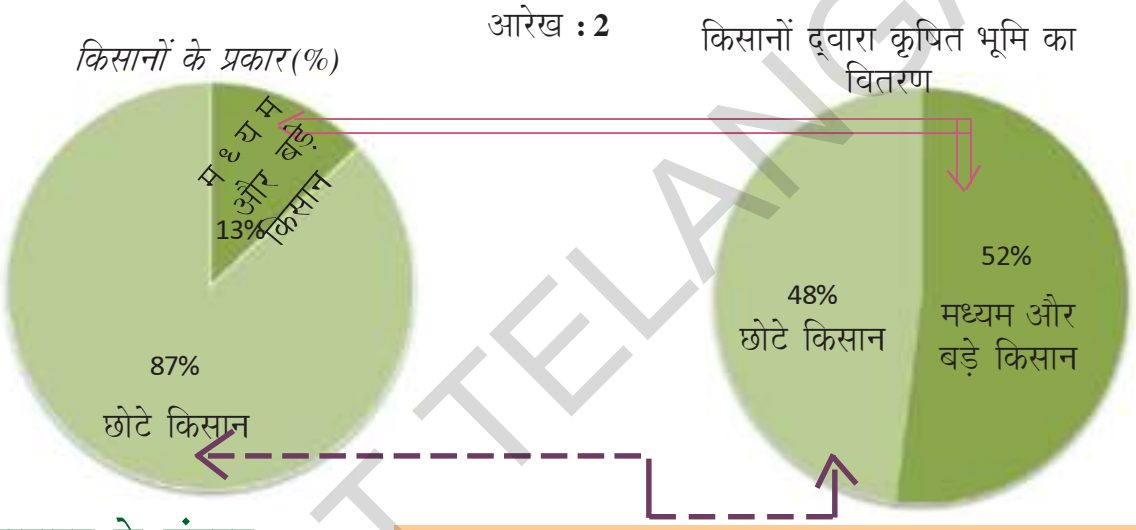

उत्पादन के संगठन

चलिए, हम रामपुर में उत्पादन की समग्र प्रक्रिया को समझने की कोशिश करेंगे। उत्पादन का उद्देश्य है लोगों की ज़रूरत की वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन। इसके अलावा निर्माता को उत्पादन के लिए अनेक वस्तुओं की आवश्यकता होती है। ये इस प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है।

पहली आवश्यकता जमीन और प्राकृतिक संसाधन जैसे पानी, वन, खनिज है। हमने जमीन और पानी का उपयोग रामपुर में खेती के लिए किस प्रकार किया जाता है, इसके बारे में ऊपर पढ़ा है।

दूसरी आवश्यकता श्रम की है। यानि काम करने वाले लोगों की है। कुछ उत्पादन गतिविधियों में आवश्यक कार्य करने के लिए उच्च प्रशिक्षित और शिक्षित श्रमिकों की आवश्यकता होती है। अन्य गतिविधियों में हाथ से काम करने वाले श्रमिकों की आवश्यकता होती है। प्रत्येक श्रमिक उत्पादन के लिए आवश्यक श्रम प्रदान करता है। आम उपयोग के विपरीत, श्रम उत्पादन में, केवल शारीरिक श्रम को ही नहीं बल्कि मानव के सभी प्रयासों को दर्शाया जाता है। इंजीनियर, प्रबंधक, लेखापाल, पर्यवेक्षक, मशीन ऑपरेटर, बिक्री प्रतिनिधि और आकस्मिक श्रमिक सभी कारखानों को (उनके उत्पाद को बनाने और बेचने के लिए) श्रम प्रदान कर रहे हैं।

SCERT TELANGANA

तीसरी आवश्यकता उत्पादन के दौरान हर स्तर पर आवश्यक आगतों की विविधता की है, यानी पूंजी की है। पूंजी के अंतर्गत आने वाली वस्तुएँ क्या हैं ?

(क) उपकरण, मशीन, इमारत

उपकरण और मशीनों की श्रृंखला में जनरेटर, टर्बाइन, कंप्यूटर स्वचालित मशीनों जैसे अत्याधुनिक मशीनें और एक किसान के हल के रूप में बहुत ही सरल उपकरण दोनों शामिल होते हैं। इनका इस्तेमाल उत्पादन की प्रक्रिया में शीघ्रता से नहीं हो रहा हैं। वे कई वर्षों से इन वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए मदद कर रहे हैं। ये वर्षों तक इस्तेमाल किये जा सकते हैं। बस कुछ मरम्मत और रखरखाव की आवश्यकता होती है। इसे अचल पूँजी या भौतिक पूँजी कहा जाता है। हालांकि सभी मशीनों और बेहतर उपकरणों को इस्तेमाल करने के कुछ वर्षों बाद बदला जा सकता है।

(ख) कच्चे माल और धन की आवश्यकता :

इस तरह बुनकर और कुम्हार द्वारा मिट्टी या धागे का उपयोग कच्चे माल के रूप में उत्पादन में किया जाता है। इसके अलावा उत्पादन के लिए, अन्य आवश्यक सामग्री खरीदने के लिए और पूर्ण उत्पादन का भुगतान करने के लिए धन की आवश्यकता होती है। उत्पादन को पूरा करने और उसके बाद बाजार में इन वस्तुओं या सेवाओं को बेचने में समय लगता है। उसके बाद ही पैसा उत्पादन की प्रक्रिया में वापस आता है। कच्चे माल और पैसे की इस आवश्यकता को 'कार्यशील पूँजी' कहा जाता है। उपकरणों, मशीनों या इमारतों के विपरीत उत्पादन चक्र में, इसका उपयोग किया जाता है इसीलिए यह भौतिक पूँजी से अलग है ।

चौथी आवश्यकता तकनीकी और उद्यम है :

कुछ वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करने के लिए एक सार्थक तरीके से जिस प्रकार भूमि, श्रम और भौतिक पूँजी की आवश्यकता होती है उसी प्रकार उत्पादन प्रक्रिया के लिए ज्ञान और आत्मविश्वास भी आवश्यक होता है। उनके द्वारा किराये पर लिये गये भौतिक पूँजी के प्रबंधक या मालिक उन्हें यह ज्ञान प्रदान करते हैं। मालिकों को बाज़ार के खतरे उठाने के लिए तैयार रहना पड़ता है क्योंकि उन्हें उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के लिए पर्याप्त खरीददारी की आवश्यकता होती है। हमारे समाज, में सबसे अधिक माल और सेवाएँ बाज़ार में बिक्री के लिए उत्पादित कर रहे हैं, इसीलिए बाज़ार के लिए उत्पादन उद्यमी को योजना, संगठन और प्रबंधन करने की आवश्यकता होती है। उद्यमी किसान, दूकानदार, छोटे निर्माता, डॉक्टर, वकीलों, आदि या बड़ी कंपनियों के रूप में सेवा प्रदाता हो सकता हैं। उनके सामान या सेवाएँ लोगों के द्वारा खरीदे जाते हैं। वे लाभ कमा सकते हैं या नुकसान उठा सकते हैं।

चित्र 8.1 लघु किसान, बड़े किसान। अगले भाग को पढ़ने के बाद इनका संबंध उत्पादन के कारकों के साथ दर्शाने वाला कैप्शन (caption) लिखिए।

उत्पादन भूमि, श्रम और पूँजी के तत्वों के संयोजन से उद्यमी या लोगों द्वारा आयोजित किया जाता है। इन्हें उत्पादन के कारकों के रूप में जाना जाता है ।

© NCERT not to be republished

कृषि के लिए श्रम

जमीन के बाद, श्रम, उत्पादन के लिए अगला आवश्यक कारक है। कृषि में कड़ी मेहनत की आवश्यकता है। अपने परिवारों के साथ साथ अधिकतर छोटे किसान अपने खेतों में ही खेती करते हैं। आम तौर पर, वे खुद की खेती के लिए आवश्यक श्रम करते हैं। मध्यम और बड़े किसान अपने खेतों पर काम करने के लिए खेत मज़दूरों को किराये पर लगाते हैं।

खेत मज़दूर, छोटे भूखंडों वाले परिवारों से या भूमिहीन परिवारों से आते हैं। अपने स्वयं के खेतों पर काम कर रहे किसानों के विपरीत, खेत मजदूरों को जमीन पर उगाई जानेवाली फसलों पर कोई अधिकार नहीं होता है। इसके बजाय वे जितना काम करते हैं, उसके लिए किसान उन्हें मज़दूरी का भुगतान करता है। वे काम करने के लिए नियोजित किये जाते हैं।

चित्र8.2 हिमालय में आलू का संग्रहण

मज़दूरी नकद या वस्तु (फसल) में की जाती है। कभी कभी मजदूरों को भोजन भी मिलता है। मज़दूरी (बुवाई और कटाई) एक खेत गतिविधि से दूसरी फसल से फसल, क्षेत्र से क्षेत्र भिन्न होती है। रोज़गार की अवधि में व्यापक बदलाव होता है। एक खेत मज़दूर दैनिक आधार पर कार्यरत हो सकता है या एक विशेष खेत गतिविधि कटाई के लिए या पूरे वर्ष के लिए अनुबंधित किया जा सकता है।

शिवय्या, रामपुर में दैनिक मज़दूरी पर काम करने वाला एक भूमिहीन खेत मजदूर है। इसका मतलब यह है कि वह नियमित रूप से काम की खोज करता है। शिवय्या की मज़दूरी, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मज़दूरों के लिए स्थापित मज़दूरी से कम हैं। रामपुर में खेत मज़दूरों के बीच काम के लिए भारी प्रतिस्पर्धा है, इसीलिए लोग कम मज़दूरी पर काम करने के लिए तैयार हैं। बड़े किसानों द्वारा तेज़ी से ट्रैक्टर, थ्रेशर, हार्वेस्टर जैसी मशीनों पर निर्भर होने से एक कार्यकर्ता को उपलब्ध काम के दिनों की संख्या, ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत कम होती जा रही है। पिछले साल शिवय्या को खेत पर काम, पाँच महीने से भी कम मिला। जब काम नहीं होता है तब उस अवधि में शिवय्या और उसके जैसे अन्य लोग MGNREGA के अंतर्गत काम के लिए ग्राम पंचायत को आवेदन भेजते हैं।

तालिका-1 दिसंबर 2011 में एकीकृत आंध्र प्रदेश में अलग कृषि गतिविधियों के लिए दैनिक मज़दूरी। (रुपये में)

- शिवय्या के जैसे खेत मज़दूर गरीब क्यों हैं?
- रामपुर में बड़े और मझोले किसान अपने खेतों के लिए श्रमिक पाने के लिए क्या करते हैं? अपने क्षेत्र के साथ तुलना करें।
- निम्न तालिका भरें :

उत्पादन प्रक्रिया में श्रम	प्रत्येक के लिए उत्पादन गतिविधि के तीन अलग उदाहरण दें।
जहाँ मालिक/परिवार भी आवश्यक श्रम प्रदान करता है।	
जहाँ मालिक काम करने के लिए मज़दूर किराये पर रखते हैं।	

- आपके क्षेत्र में वस्तुओं या सेवाओं के उत्पादन में श्रम उपलब्ध कराने के क्या तरीके अपनाये जा रहे हैं?

SCERT TELANGANA

उपर्युक्त तालिका एकीकृत आंध्रप्रदेश में श्रमिकों को विभिन्न कृषि गतिविधियों के लिए दिये जाने वाले औसत दैनिक वेतन को दर्शाती है। हालांकि, क्षेत्रों में इसमें बहुत कुछ परिवर्तन है।

श्रमिक	जुताई	बुवाई	निराई	रोपण	कटाई	फटकाई	खलिहान	कपास चुनना
पुरुष	214	197	215	-	164	168	152	-
स्त्री	-	152	130	143	126	124	118	136

एक महिला कार्यकर्ता पूरे दिन में 136 रुपये कपास चुनने के पाती है। आप देख सकते हैं कि रोपण जैसे कुछ काम केवल पुरुषों द्वारा ही मुख्य रूप से किये जाते हैं, इसीलिए महिलाओं के लिए कोई वेतन दर्ज़ नहीं किया गया है। धान की रोपाई और कपास चुनने का कार्य मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा किया जाता है। कुछ उत्पादन गतिविधियाँ महिलाओं और पुरुषों दोनों के द्वारा की जाती है। पुरुषों की मज़दूरी एक ही काम के लिए महिलाओं की तुलना में अधिक है। राज्य सरकारों को राज्य के भीतर (निजी और सार्वजनिक) सभी नियोक्ताओं द्वारा भुगतान किये जाने वाले सामान्य न्यूनतम मज़दूरी को तय कर देना चाहिए।

- ऊपर दिये गये दैनिक मज़दूरी के आँकड़ों की तुलना आपके क्षेत्र में इनमें से किसी भी एक कार्य के लिए दी जाने वाली मज़दूरी से कीजिए।
- न्यूनतम मजदूरी पता लगाएँ और इस के साथ तुलना करें।
- एक ही काम के लिए पुरुषों को महिलाओं से अधिक वेतन क्यों दिया जाता है? चर्चा करें।

पूँजी : भौतिक और कार्यशील पूँजी की व्यवस्था

आपने पहले की कक्षाओं में आधुनिक खेती में शामिल अधिक उपज देने वाली बीज की किस्मों सुनिश्चित सिंचाई, उर्वरक और कीटनाशकों के बारे में पढ़ा है। इसका मतलब है कि, किसानों को पर्याप्त उत्पादन के लिए पूँजी और पैसे की आवश्यकता होती है। किसान भौतिक पूँजी और खेती में आवश्यक कार्यशील पूँजी की व्यवस्था कैसे करते हैं, चलिए हम इसे देखते हैं।

ज्यादातर छोटे किसान कार्यशील पूँजी की व्यवस्था के लिए पैसे उधार लेते हैं। खेती के विभिन्न आगतों की आपूर्ति करने वाले बड़े किसानों या गाँव साहूकारों या व्यापारियों से वे उधार लेते हैं। ऐसे ऋण पर ब्याज की दर बहुत अधिक होती है। ऋण चुकाने के लिए वे एक बड़े तनाव से गुज़रते है।

सविता एक छोटी किसान है। वह अपने 1 हेक्टेर भूमि पर गेहूँ की खेती करने के लिए योजना बना रही है। बीज, खाद और कीटनाशकों के अलावा, पानी खरीदने और खेत उपकरणों की मरम्मत के लिए उसे पैसे की जरूरत है। उसका अंदाज़ा है कि कार्यशील पूँजी ही 6000 रुपये की होगी। उसके पास पैसे नहीं है, तो उसने तेजपाल, एक बड़े किसान से उधार लेने का फैसला किया। तेज़पाल 36% वार्षिक ब्याज़ दर (जो एक बहुत उच्च दर है) पर सविता को ऋण देने के लिए तैयार हो जाता है। सविता भी 100 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से फसल की कटाई के दौरान एक खेत मजदूर के रूप में उसके (तेजपाल के) खेत पर काम करने का वादा कर लेती है। आप बता सकते हैं कि यह वेतन काफी कम है। सविता अपने खेत पर कटाई को पूरा करने के लिए बहुत मेहनत

SCERT TELANGANA

से काम करती हैं और फिर तेजपाल के लिए एक खेत मज़दूर के रूप में भी बहुत मेहनत करती है। कटाई का समय एक बहुत ही व्यस्त समय होता है। तीन बच्चों की माँ के रूप में उसे घरेलू जिम्मेदारियाँ बहुत है। सविता इन कठिन परिस्थितियों के लिए सहमत हो जाती है क्योंकि वह जानती है कि ऋण प्राप्त करना एक छोटे किसान के लिए मुश्किल है।

छोटे किसानों के विपरीत, मध्यम और बड़े किसानों को आम तौर पर खेती से बचत होती है। इसीलिए वे खेती के लिए आवश्यक कार्यशील पूँजी, बीज, उर्वरक, कीटनाशक, मज़दूरों का वेतन आदि की व्यवस्था करने में सक्षम हैं। ये किसान कैसे बचत कर सकते हैं? आपको अगले भाग में इसका जवाब मिल जायेगा।

इस गाँव में सभी बड़े किसानों के पास ट्रैक्टर है। वे अपने खेतों में हल चलाने और बुवाई के लिए इस का उपयोग करते हैं और अन्य छोटे किसानों को ये ट्रैक्टर बाहर किराये पर देते हैं। उनमें से ज्यादातर के पास थ्रेशर और हार्वेस्टर भी हैं। ऐसे सभी किसानों के पास अपने खेतों की सिंचाई करने के लिए कई ट्यूबवेल हैं। ये सभी उपकरण और मशीनें सब की खेती के लिए भौतिक पूँजी होते हैं।

किसान के लिए बचत या हानि

चलिए हम कल्पना करते हैं कि किसानों में उत्पादन के तीन कारकों का उपयोग कर अपनी भूमि पर गेहूँ का उत्पादन किया है। वे परिवार के उपभोग के लिए गेहूँ का एक हिस्सा रखते हैं और शेष हिस्सा बेच देते हैं। सविता और गोविंद के बेटे जैसे छोटे किसानों के पास बहुत कम गेहूँ शेष बचता है क्योंकि उनका कुल उत्पादन बहुत कम है और इसमें से ही वह अपने परिवार की ज़रूरत के लिए कुछ हिस्सा रख लेते हैं। तो आम तौर पर यह थोक बाज़ार के लिए गेहूँ की आपूर्ति मध्यम और बडे किसान द्वारा ही होती है। बाज़ारों में व्यापारियों गेहूँ खरीदते हैं बाद में कस्बों और शहरों में दुकानदारों को बेच देते है।

तेजपाल, बड़े किसान के पास उसकी भूमि से 350 क्विंटल गेहूँ अधिशेष हैं। वह राइगंज बाज़ार में अधिशेष गेहूँ बेचता है और जिससे उसे अच्छी कमाई होती है।

चित्र 8.3 : अनाज बाज़ार में ले जाते हुए।

तेजपाल अपनी कमाई से क्या करता है? पिछले साल, तेजपाल ने अपने पैसे बैंक खाते में रखे थे। बाद में उसने पैसे सविता और उसकी तरह अन्य किसानों को जिन्हें ऋण की ज़रूरत थी उन्हें दिये थे। उसने अगले सत्र में खेती के लिए कार्यशील पूँजी की व्यवस्था के लिए भी इस बचत का इस्तेमाल किया। इस साल तेजपाल एक और ट्रैक्टर खरीदने के लिए अपनी आय का उपयोग करने की योजना कर रहा है। पड़ोसी गाँवों में ट्रैक्टर को किराये पर देना एक अच्छा व्यवसाय है। एक अन्य ट्रैक्टर से उसकी अचल पूँजी में वृद्धि होगी।

© SCERT TELANGANA

तेजपाल जैसे अन्य बड़े और मध्यम किसान अधिशेष कृषि उपज बेचते हैं। आय का एक बचे हुए भाग को अगले सत्र के लिए पूँजी खरीदने के लिए रखा जाता है। कुछ किसान पशु, ट्रक खरीदने के लिए या दुकानों की स्थापना करने के लिए भी इसका उपयोग करते हैं। ये गैर कृषि गतिविधियों के लिए पूँजी का गठन है। वे अधिक भूमि भी खरीद सकते हैं।

विशेषकर बाढ़ और हानिकारक कीटों के कारण खेत गतिविधियों में प्रायः नुकसान होता है। कृषि उपज की कीमत में अचानक गिरावट आना अन्य खतरे का संकेत होता है। ऐसी स्थितियों में किसानों के लिए खर्च कर दी गयी कार्यशील पूँजी की पुनः प्राप्ति कठिन होती है।

• उत्पादन के लिए अधिशेष और पूँजी

तीन किसानों को ले। हर एक ने अपने खेतों पर गेहूँ उगाया है। हालांकि कॉलम 2 के अनुसार उत्पादन में भिन्नता हैं। विभिन्न किसानों की स्थितियों का विश्लेषण करने के लिए हमें मानना होगा कि कुछ परिस्थितियाँ सभी के लिए समान थीं। कुछ तत्वों को सामान्य रखते हुए हम निम्न परिस्थितियों का अनुमान लगायेंगे।

1. प्रत्येक किसान परिवार में गेहूँ की खपत समान ही (कॉलम 3) है।
2. अधिशेष गेहूँ का इस साल सभी किसानों द्वारा अगले साल के उत्पादन के लिए कार्यशील पूँजी के समान बीज के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह करने के लिए उनके पास भूमि है।
3. अनुमान लगाइए कि सभी खेतों में उत्पादन में उपयोग की गई कार्यशील पूँजी से उत्पादन निर्गत (Output) दुगुना हो गया है। इससे उत्पादन में अचानक कोई नुकसान नहीं हुआ।

तालिका को पूरा कीजिए ।

किसान **1**

वर्ष	उत्पादन	उपभोग	अधिशेष उत्पादन-उपभोग	अगले साल के लिए पूँजी
वर्ष 1	100	40	60	60
वर्ष 2	120	40		
वर्ष 3		40		

किसान **2**

वर्ष	उत्पादन	उप भोग	अधिशेष उत्पादन-उपभोग	अगले साल के लिए पूँजी
वर्ष 1	80	40		
वर्ष 2		40		
वर्ष 3		40		

किसान **3**

वर्ष	उत्पादन	उपभोग	अधिशेष उत्पादन-उपभोग	अगले साल के लिए पूँजी
वर्ष 1	60	40		
वर्ष 2		40		
वर्ष 3		40		

- इन वर्षों में तीन किसानों द्वारा गेहूँ के उत्पादन की तुलना करें ।
- वर्ष 3 में किसान 3 का क्या हुआ? क्या वह उत्पादन जारी रख सकता है? उसे उत्पादन ज़ारी रखने के लिए क्या करना होगा?

© SCERT TELANGANA

चित्र 8.4 : चाय और रबड़ की फसल/कृषि क्षेत्र में चाय, कॉफी, रबर बागान और फलों के बगीचे जैसी फसलें शामिल होती हैं।

रामपुर मैं गैर कृषि गतिविधियाँ

खेती जो एक मुख्य उत्पादन गतिविधि है उसके अलावा कुछ गैर कृषि उत्पादन गतिविधियाँ भी हैं। रामपुर में काम कर रहे लोगों में केवल 25 प्रतिशत लोग कृषि के अलावा अन्य गतिविधियों में लगे हुए हैं।

डेयरी-अन्य सामान्य गतिविधि

डेयरी, रामपुर के कई परिवारों में एक सामान्य गतिविधि है। लोग बरसात के मौसम के दौरान उगायी गयी विभिन्न प्रकार की घास, जवार, बाजरा की भूसी अपनी भैंसों को खिलाते हैं। राइगंज में दूध बेचा जाता है। जहाँगीराबाद के दो व्यापारियों ने रायगंज में दूध संग्रहण-प्रशीतन केंद्र स्थापित किये हैं जहाँ से दूध बुलंदशहर और दिल्ली जैसे दूरस्थ स्थानों को भेजा जाता है। इस गतिविधि के उत्पादन कारक संक्षेप में वर्णित हैं :

भूमि : गाँव में वस्तुओं को रखने का छप्परदार (Shed)
श्रमः पारिवारिक श्रम, विशेष रूप से महिलाएँ भैंसों की देखभाल करती हैं।
भौतिक पूँजी : भैंसे जो पशु मेले में खरीदी जाती है।
कार्यशील पूँजी : अपनी ज़मीन से प्राप्त भोजन, कुछ खरीदी गयी दवाइयाँ

रामपुर में छोटे पैमाने पर निर्माण गतिविधियाँ

वर्तमान में, पचास से कम लोग रामपुर में निर्माण में लगे हुए हैं। रामपुर में नगरों और शहरों, के बड़े कारखानों में होने वाले निर्माण के विपरीत बहुत सरल तरीके से उत्पादन एक छोटे पैमाने पर किया जाता है। उत्पादन प्रायः घरों या खेतों में पारिवारिक श्रम की मदद से किया जाता है। श्रमिकों को कभी कभी ही काम पर रखा जाता है।

SCERT TELANGANA

मिश्रीलाल ने बिजली से चलने वाली एक यांत्रिक गन्ना पेराई मशीन खरीदी और गुड़ तैयार किया है। पहले गन्नों को कुचलने के लिए बैलों का उपयोग किया जाता था, लेकिन इन दिनों लोग मशीनों द्वारा इस काम को करना पसंद कर रहे हैं। अपनी खेती के अलावा मिश्रीलाल अन्य किसानों से भी गन्ना खरीदता है और गुड़ बनाता है। गुड़ वह जहांगीराबाद में व्यापारियों को बेच देता है। इस प्रक्रिया में मिश्रीलाल को छोटा सा लाभ होता है।

- इस प्रक्रिया की स्थापना करने के लिए मिश्रीलाल को किस भौतिक पूँजी की आवश्यकता है।
- कौन इस मामले में श्रम प्रदान करता है ?
- मिश्रीलाल अपने लाभ को बढ़ाने में असमर्थ क्यों है? उन कारणों के बारे में सोचिए जिससे वह नुकसान का सामना कर सकता है।
- मिश्रीलाल अपने गाँव में गुड़ नहीं बेचकर जहाँगीराबाद में व्यापारियों को क्यों बेचता है?

रामपुर गाँव के दुकानदार

- किसकी भूमि पर दूकान होती है?
- कौन इन दूकानों के लिए श्रमिक उपलब्ध कराते हैं जो खाने पीने की चीजें बेचते है ?
- अंदाजा लगाओं कि कितनी कार्यशील पूँजी की इन दूकानों को आवश्यकता है।
- भौतिक वस्तुओं की सूची बनाओ।
- आपके क्षेत्र के फेरी वालों से प्रतिदिन के विक्रय के संबंध में जानकारी प्राप्त कीजिए तथा ज्ञात कीजिए कि क्या उन्हें बचत राशि संभव है अपने शिक्षक से चर्चा कीजिए।

रामपुर में व्यापार करने वाले लोग बहुत कम हैं। रामपुर के व्यापारी विभिन्न वस्तुएँ शहर के थोक बाज़ारों से क्रय करते हैं और उन्हें गाँव में बेचते हैं। गाँव के लघु (छोटे) सामान्य दुकानदार बहुधा अपनी दुकानों में चावल, गेहूँ, शक्कर, चाय, तेल, बिस्कुट, साबुन, टूथपेस्ट, बैटरी, मोमबत्ती, नोटबुक, पेन, पेंसिल और कभी कभी कपड़ें भी बेचते हैं ।

कुछ परिवार जिनके घर बस स्टैंड के निकट होते हैं, वे अपने घर के कुछ हिस्सों में छोटी दुकान चलाते हैं। वे खाने पीने की वस्तुओं की बिक्री करते हैं। जैसे समोसा, कचौरी, नमकीन, कुछ मिठाइयाँ , चॉकलेट, शीतपेयजल इत्यादि । महिलाएँ व परिवार के बच्चे भी इसमें सहायक होते हैं। हमारे देश में अधिकतर स्वरोजगारी व्यक्ति हैं जैसे कृषक, दुकानदार, फेरीवाले आदि। वे स्वामी हैं क्योंकि वे ही योजना बनाते हैं प्रबंध करते हैं और वस्तुओं और सेवाओं का जोखिम उठाते हैं। यथा समय वे अपने मज़दूरों का प्रबंध भी स्वयं करते हैं।

कुछ दूकानदार अपने गाँवों की वस्तुओं का भी क्रय करते हैं और बडे गाँवों व शहरों में ले जाकर विक्रय करते हैं। जैसे जो व्यक्ति गेहूँ की मिल चलाते हैं वे गेहूँ कृषकों से लेते हैं और राइगंज के बाज़ार में विक्रय करते हैं। गेहूँ की मिल चलाना और व्यापार करना दो भिन्न व्यापार हैं।

यातायात - तीव्रता से विकसित क्षेत्र

रामपुर से राइगंज को जोड़ने वाली सड़क पर विभिन्न यातायात के साधन प्रयुक्त होते हैं जैसे - रिक्शावाला, ताँगावाला, जीप, ट्रैक्टर, ट्रक-ड्राईवर कुछ परंपरागत बैलगाडियों और बोगियों को चलाने वाले लोग, परिवहन सेवा करते हैं। वे व्यक्तियों तथा सामानों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमित करते हैं और उनसे किराया (धन) प्राप्त करते हैं। यातायात कार्यों में व्यक्तियों की संलग्नता विगत वर्षों में बहुधा बढ़ी है।

SCERT TELANGANA

- किशोर की अचल पूँजी राशि (जमा, कुल राशि) कितनी है ?
- उसकी कार्यशील पूँजी क्या होगी?
- किशोर कितने उत्पादित कार्यों में संलग्न है ?
- क्या आप कह सकते हैं कि किशोर ने रामपुर की अच्छी सड़कों से लाभ उठाया है?

किशोर एक कृषक श्रमिक है अन्य श्रमिकों की भाँति अपनी आय से किशोर भी अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ है। कुछ वर्ष पूर्व किशोर ने बैंक से ऋण लिया। यह सरकार की योजना के अंतर्गत था। जिसमें कमतर ऋण भूमिहीन व्यक्तियों को प्रदान किया गया था । किशोर ने इस धन से भैंस खरीदी। अब वह भैंस के दूध को बेचने का कार्य करता है तथा साथ ही वह भैंस को लकड़ी की गाड़ी लगाकर भैंसगाड़ी के रूप में, यातायात साधन के रूप में प्रयुक्त कर विभिन्न वस्तुएँ लाता हैं। सप्ताह में एक दिन वह कुम्हार के लिए काली मिट्टी गंगा नदी से लाता है और कभी जहाँगीराबाद से गुड़ या अन्य वस्तुएँ भी लाता है। प्रतिमाह वह यातायात साधन का कार्य प्राप्त करता है जिसके परिणाम स्वरूप किशोर विगत वर्षों से अधिक आय की प्राप्ति कर रहा है ।

उपसंहार

कृषि गाँव की मुख्य उत्पादन प्रक्रिया है। कृषि के रूप में विगत वर्षों में कई परिवर्तन लक्षित हुये। जिससे समान भूमि पर कृषकों को कई फसलों को उगाना संभव हुआ। यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। क्योंकि भूमि सीमित व अपर्याप्त है। तथापि उत्पादन में वृद्धि बन जाती है। भूमि क्षेत्र के लिए और प्राकृतिक संसाधनों के लिए भी एक महत्वपूर्ण दवाब बन जाती है। यह अति अनिवार्य है कि हम तीव्रता से नवीन उत्पादन विधियों को ग्रहण करे जिससे प्राकृतिक स्त्रोतों के प्रयोग दीर्घकालिक हो।

कृषि अब अधिक पूँजी की माँग करती है। मध्यम तथा विशाल पैमाने के कृषक अपनी उत्पादन राशि से शेष धन रखने में समर्थ होते हैं जिसे वह आगामी कृषि कार्य में प्रयुक्त कर सके। वहीं छोटे कृषक जो भारत के 87 प्रतिशत कृषकों की गिनती में आते हैं उन्हें पूँजी प्राप्त करने में कठिनाई उत्पन्न होती है । उनका भूमि क्षेत्र कम होता है और उत्पादन भी अपर्याप्त होता है। अतिरिक्त साधनों के अभाव में वे जमा पूँजी (बचत पूँजी) रखने में असमर्थ होते हैं। अपनी कम आय के कारण ऋण के अतिरिक्त ऐसे कृषक अन्य कार्य भी करते हैं। जैसे कृषिगत मज़दूरी आदि।

उत्पादन के लिए मज़दूर प्रमुख तत्व है। यह अति उत्तम होता यदि नयी कृषि पद्धति में मजदूरों का अधिक प्रयोग होता दुर्भाग्यवश ऐसा संभव न हो सका। कृषि योग्य मजदूरी सीमित है जिससे मज़दूर अपने पड़ोसी गाँवों, शहरों, महानगरों में स्थानांतरित होकर मज़दूरी के अवसरों को प्राप्त करते हैं। कभी कभी यह गैर कृषि क्षेत्रों में भी मज़दूर रूप में कार्य करते हैं। वर्तमान में गैर कृषि क्षेत्रों में नियुक्त लोगों की संख्या बहुत कम है। (हमने कुछ उदाहरण ही देखें है) तब भी इनमें कार्य करने वालों की संख्या बहुत कम है। वर्ष 2009-2010 में प्रत्येक 100 ग्रामीण क्षेत्र के श्रमिकों में से 32 श्रमिक अकृषिगत कार्यों में संलग्न रहे। इसमें वे भी सम्मिलित है जो MGNREGA के विभिन्न कार्यक्रमों के अंतर्गत है। MGNREGA ग्रामीण क्षेत्रों के श्रमिकों के लिये बहुताधिक सहायक सिद्ध हुआ है।

SCERT TELANGANA

संभवतः भविष्य में अकृषिगत उत्पादनों की ग्रामों में अधिकता रहेगी । कृषि के समान अकृषिगत कार्यों को अधिक भूमि की आवश्यकता नहीं होती। कम पूँजी के आधार पर भी व्यक्ति अकृषिगत कार्यों को संपन्न कर सकता है। वे कहाँ से इस पूँजी को उपलब्ध करते हैं? कुछ तो अपना शेषधन (स्वयं के धन) का प्रयोग करते हैं पर बहुधा ऋण पर आधारित होते हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि ऋण कम ब्याजदरों पर उपलब्ध हो जिससे अपनी बचत राशि के अभाव में भी मानव अकृषिगत कार्यों को प्रारंभ कर सके। द्वितीय अनिवार्य महत्व की बात यह है कि वहाँ बाज़ार भी उपलब्ध हो सके जिससे कि उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का वह विक्रय कर सकें। हमने रामपुर की कथा में देखा कि उसके पडोसी ग्रामों व शहरों में बाजार उपलब्ध थे जहाँ दुग्ध, गुड़, गेहूँ आदि की उपलब्धता सरल थी। अधिकतः यदि ग्रामों को शहरों से उत्तम सड़कों, यातायात साधनों व दूर संचार साधनों द्वारा संलग्न कर दिया जायेगा तो यह संभव है कि ग्रामों में आगामी वर्षों में अकृषिगत कार्यों में बहुलता आयेगी।

मुख्य शब्द

उत्पादन के कारक	भूमि	मज़दूर	कार्यशील पूँजी
निश्चित(अचल) पूँजी	अधिशेष	कृषि गतिविधि	अकृषिगत गतिविधि

अपनी सीखने की क्षमता सुधारें

1. प्रत्येक दस वर्ष में भारत देश में जनगणना विभाग द्वारा सर्वेक्षण किया जाता है। और निम्न प्रारूप द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। विवरण प्रत्येक गाँव से प्राप्त किये जाते हैं। निम्नलिखित विवरण पत्र को रामपुर गाँव की प्राप्त जानकारी के आधार पर पूर्ण कीजिए।

अ) स्थान :

आ) कुल गाँव का क्षेत्र :

इ) प्रयुक्त भूमि (हेक्टर में)

कृषि भूमि		भूमि, जो कृषि हेतु उपलब्ध नहीं है।
सिंचित	असिंचित	(जो निवास, सड़क, तालाब, चारागाह
		के लिए प्रयुक्त क्षेत्र) 26 हेक्टर

उ) सुविधाएँ
शैक्षिक
चिकित्सीय
बाज़ार
विद्युत आपूर्ति
संचार सेवा
निकटस्थ शहर

SCERT TELANGANA

2. रामपुर गाँव में कृषक मज़दूरों की मजदूरी अन्य कृषक मजदूरों से कम क्यों है ?

3. अपने क्षेत्र के दो मज़दूरों से चर्चा कीजिए। चाहे वह कृषक मजदूर हो या निर्माण क्षेत्र के मज़दूर ज्ञात कीजिए कि वे प्रतिदिन क्या वेतन पाते हैं ? उन्हें मजदूरी के रूप में धन दिया जाता है या वस्तु? क्या उन्हें प्रतिदिन कार्य प्राप्त होता है ? क्या वे ऋणी (कर्जे में) है ?

4. समान भूमिपर हम किन विभिन्न तरीकों द्वारा उत्पादन में वृद्धि कर सकते हैं। उदाहरण सहित समझाइए।

5. किस तरह मध्यम और बड़े पैमाने के कृषक पूँजी प्राप्त करते हैं तथा किस तरह से छोटे (लघु) कृषक उनसे भिन्न है ?

6. किन शर्तों पर सविता ने तेजपाल से ऋण लिया? यदि सविता बैंक से कम दर पर ऋण लेती तो क्या उसकी स्थिति भिन्न होती ?

7. आप अपने क्षेत्र के वृद्ध व्यक्ति से चर्चा कीजिए तथा पता लगाए कि विगत तीस वर्षों में सिंचाई तथा उत्पादन के माध्यमों (साधनों) में क्या अंतर आये?

8. आपके क्षेत्र में मुख्य गैर कृषि उत्पादन क्रियाएँ कौनसी हैं तथा किसी एक गतिविधि पर संक्षेप में टिप्पणी कीजिए।

9. ऐसी स्थिति की कल्पना कीजिए जहाँ मजदूरों को भूमि के अलावा, उत्पादन के अन्य कारकों की प्राप्ति नहीं होती है। क्या रामपुर गाँव की कहानी इससे भिन्न है? किस तरह? कक्षा में चर्चा कीजिए।

10. गौसपुर और माझोली उत्तर बिहार के दो गाँव हैं। गाँव के कुल 850 आवास गृहों के निवासियों में से 250 मनुष्य अपना रोजगार ग्रामीण पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, मुंबई, सूरत, हैदराबाद और नागपुर में पाते हैं। इस तरह का स्थानांतरण भारतीय गाँवों में सामान्य है। मनुष्य क्यों स्थानांतरित होते हैं? क्या आप वर्णन कर सकते हैं? (आपकी कल्पना और पूर्व अध्याय के आधार पर) बताइए कि गौसपुर और माझोली के स्थानांतरित मनुष्य क्या अपने क्षेत्र में कार्य कर सकते हैं ?

11. उत्पादन हेतु भूमि शहरी (नगरीय) क्षेत्रों में भी अनिवार्य है किन आधारों पर यहाँ भूमि का प्रयोग ग्रामीण क्षेत्रों से भिन्न है ?

12. उत्पादन के आधार पर भूमि के अर्थ को समझिए तथा कृषि अतिरिक्त भूमि के प्रयोग के तीन उदाहरण दीजिए, जिसको उत्पादन की प्रक्रिया में अत्यंत आवश्यक माना जाता है ?

13. 'जल' जो उत्पादन के लिए एक प्राकृतिक स्तोत्र है। विशेषतः कृषिगत उत्पादन में अब यह उपयोग हेतु विपुल राशि (धन) की माँग कर रहा है। इस कथन की व्याख्या कीजिए।

SCERT TELANGANA